सरकारी किफायत के दुष्परिणाम

यूके की सरकार ने पिछले वर्षों में प्रयास किए हैं कि विकलांगता के आधार पर कल्याणकारी योजनाओं का लाभ चाहने वालों की संख्या कम की जाए। एक अध्ययन के मुताबिक सरकार के इस कदम ने 590 लोगों को खुदकुशी की ओर धकेला है और करीब 7.25 लाख लोगों को अवसाद-रोधी दवाइयों की ओर।

यूके में 2010 के बाद से करीब 10 लाख लोगों की विकलांगता आधारित भत्ते की पात्रता की समीक्षा की गई है। दावे किए जाते रहे हैं कि यह कदम बहुत कठोर है और यह कदम ऐसे लोगों पर दबाव बनाता है जो वास्तव में काम नहीं कर सकते, और कभी-कभार उन्हें खुदकुशी को भी मजबूर कर देता है। इस दावे की जांच लिवरपूल विश्वविद्यालय के बेन बार और उनके दल ने की है। कार्य व पेंशन विभाग ने तो सीधे-सीधे जानकारी दी नहीं कि कितने लोगों को विकलांगता भत्ते से वंचित किया गया है। तो बार ने यह पता लगाया कि क्या उन इलाकों की स्वास्थ्य सम्बंधी तस्वीर में कोई परिवर्तन हुआ है जहां के लोगों का पुनर्मूल्यांकन किया गया था।

दल को पता चला कि 2010 और 2013 के बीच जिन 149 स्थानीय अधिकारियों का पूनर्मूल्यांकन हुआ था उनमें खुदकुशी की दर और अवसाद-रोधी दवाइयों के प्रिस्क्रिप्शन में वृद्धि हुई है। जीवन में पहली बार मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं रिपोर्ट करने वाले लोगों की तादाद बढ़कर 2.75 लाख हो गई। और ये तीनों बातें सिर्फ कामकाजी उम्र के लोगों में बढ़ी हैं, जिसका मतलब है कि इनका सम्बंध सरकार के उस कार्यक्रम से है जिसके ज़रिए अधिक से अधिक लोगों को काम पर लाने की कोशिश हो रही है।

जिन लोगों का पुनर्मूल्यांकन किया गया उनमें से 20 प्रतिशत के भत्ते बंद हुए। मगर बार के मुताबिक ज़्यादा बड़ी समस्या यह रही कि इस प्रक्रिया में व्याप्त अनिश्चितता के चलते बड़ी संख्या में लोग हैरान रहे और उन पर नकारात्मक असर हुआ।

सरकारी आंकड़ों के अभाव में अभी यह नहीं कहा जा सकता कि इस कार्यक्रम के तहत कितने लोगों को काम पर लाया गया। इसी दल ने अन्य देशों के अध्ययन में पाया था कि विकलांगता भत्ते से वंचित लोग काम पर जाने की बजाय बेरोज़गारी भत्ते का आवेदन कर देते हैं। बार के दल के द्वारा किए जा रहे एक अध्ययन का नतीजा यह है कि इस नीति के द्वारा जितने लोग काम पर लौटे हैं, वह सरकार की उम्मीद से बहुत कम है।

बार के दल के ये निष्कर्ष उस सामान्य निष्कर्ष से मेल खाते हैं कि जब सरकार कल्याणकारी योजनाओं पर अपना खर्च कम करती है, तो उसके प्रतिकूल असर होते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 135 का हल

स	दि	श		आ	म		सु	आ
पा		र		य				हा
ट		द	क	न	का	प	ठा	र
	प				र्ति			ना
अ	क्ष		म	श	क		मी	ल
त्र			ह				न	
प्रा	कृ	ति	क	च	य	न		प
श				म		र्म		र
न	क्शा		पा	न		दा	ड़ि	म

पत्रिका न मिलने सम्बंधी सूचना फोन या ई-मेल पर दे सकते हैं

ई-मेल : srotefeatures@gmail.com, circulation@eklavya.in,